International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 07-09-2021, Accepted: 22-09-2021, Published: 08-10-2021
Volume 6; Issue 5; 2021; Page No. 79-86

गँगाधर मेहेर के काव्य में प्रणय चेतना

डॉ. चिन्मयी मिश्र
पी.एच.डी, रेवेंशॉ विश्वविद्यालय, कटक, ओडिशा, भारत

सारांश
गँगाधर मेहेर जी के काव्य की प्रणय चेतना आदर्श की नींव पर खडी है। सामाजिक परम्परा, नियम, संस्कृति, सभ्यता के अनुरूप इसको स्वीकारा गया है। प्रणय में उद्धामता, उत्संखलता को मेहेर जी ने कतई बरदास्त नहीं किया है। जहाँ कहीं वैसा हुआ है, उन प्रेमियों को किसी न किसी रूप से दण्ड देकर सुधरने को विवश कर दिया गया है और पाठकों तक यह संदेश पहूँचा दिया गया है वे इन प्रेमियों की तरह ऐसा प्रेम करेंगे तो उन्हें भी दण्ड मिल सकता है। प्रेमी के मन में प्रेम का अकस्मात जोर पकडना और उनको मुग्धावस्था तक ले चलना दर्शाता है कि प्रेमियों के मन में प्रेम का जबर्दस्त प्रभाव रहता है। फिर भी यदि उसे संयत नहीं बनाया गया तो तरह-तरह के दु:ख, विरह उनके जीवन में आनेवाले हैं। ऐसा हो तो प्रेमियों के जीवन का बहुत बडा हिस्सा, केवल प्रेम, प्रणय को लेकर संघर्ष करने में गुजर जायेगा। प्रेम एवं प्रणय में छल ,प्रपंन्चता का स्थान नहीं है। यदि प्रणय संयत और आदर्शपुर्ण है तो प्रतिकूल परिस्थिति में समाज की हमदर्दी तथा मदद प्रेमियों को आसानी से मिल जाती हैं। प्रेमियों का प्रणय राम-सीता जी का जैसा होना चाहिये जो न केवल आदर्श प्रेम था अपितु त्याग से महिमामण्डित श्रेय-मयी प्रेय रचनात्मक ज्ञान-धारा का एक सुंदर निदर्शन था। प्रेम की गहराई के अनुसार प्रेमियों का मिलन सुखप्रद तथा आल्हाददायक बनता है।

मूलशब्द: ओडिआ, गँगाधर मेहेर, काव्य, प्रणय चेतना,ओडिशा

प्रस्तावना
गँगाधर मेहेर जी का जन्म सन 1862 को ओडिशा के सम्बलपुर जिले के बरपाली नामक गाँव में हुआ था। जाति से जुलाह होने के कारण कपडे को बुनना तथा उन्हें स्थानीय साप्ताहिक हाट मे (जरूरी चीजों को बेचने की जगह) ले जाकर बेचना उनका काम था। बहुत गरीव होने के नाते उन्हें औपचारिक शिक्षा नहीं मिल सकी थी। अपने उद्यम से उन्होंने हिंदी, बँगला,अँग्रेजी भाषा तथा साहित्य का गहरा अध्ययन किया था। कवि-प्रतिभा उनकी जन्मजात थी। उनकी लगभग सारी रचनाओं की विषयवस्तु पौराणिक एवं ऐतिहासिक हैं। फिर भी अपनी मौलिक प्रतिभा के बल पर उन्होंने कविताओं को छन्दोंमय, मनोरम, निर्दोष तथा लालित्यपूर्ण बनाके ऐसा आकर्षणीय रूप दिया जो कि काव्य-रसिकों को रसमग्र एवं अभिभूत करने लगा। उनका पहला काव्य `कीचक बध' ओडिशा के काव्य-पिपासुओं में धूम मचा दी थी। ओडिशा के वर्षियान कवि तथा आलोचक डॅ० मायाधर मानसिंह ने लिखा है कि गँगाधर मेहेर की रचनाएँ न केवल ओडिशा में बल्कि बाहर राज्य के कवियों में भी बहुत आद्रुत हो रही थी। प्रसिद्ध हिंदी कवि लोचन प्रसाद पाण्डेय (मध्यप्रदेश) जी गँगाधर की`तपश्विनी' काव्य की प्रशंसा करते थे और उस काव्य की पंक्तियों की बार-बार आवृत्ति करते थे।[1]
गगाधर मेहेर के काव्य हैं -`कीचक वध', `तपश्विनी', `प्रणयवल्लरी', `इंदुमती', `उत्कललक्षी', `अयोध्या दृश्य', कविताकल्लोल',` अर्घ्यथाली',`अहल्यास्तब',`महिमा',`भारती भावना', `पद्मिनी',`कृषक संगीत' ।
गँगाधर मेहेर की कव्यगत विशेषताओं को देखते हुए उन्हें `स्वभाव कवि' की आख्या दी गयी है।

अध्ययन क्षेत्र
गँगाधर मेहेर के काव्य की प्रणय चेतना का अध्ययन करके उसकी विशेषताओं को रेखांकित करना ही हमारा वास्तविक अध्ययन क्षेत्र है। उनके काव्य के दुसरे विभावों के साथ हमारा कोई सरोकार नहीं है।

अब हम पर्यायक्रम से गँगाधर मेहेर के काव्य की प्रणय चेतना का विश्लेषण करते जायेंगे।
गँगाधर मेहेर के काव्य में प्रेमियों में प्रेम का उदय अकस्मात होता है। किसी सुंदर पुरुष या स्त्री को देखते ही प्रेमी के मन में उसके प्रति इतना आकर्षण बढ जाता है कि वह उसको अपना मन-प्राण समर्पण कर बैठता है। मामूली अवास्तव स्वप्न से अथवा कहीं भेंट हो जाने पर ऐसा हो सकता है। इस प्रकार गँगाधर के काव्य में प्रेम की शुरुआत हठात होती है। पहले कवि के `रस – रत्नाकर' काव्य को लिया जाए। उस काव्य में नायिका उषा स्वप्न में नायक अनिरुद्ध को देखती है। उषा का अनिरुद्ध के साथ पहले से विलकुल जान-पहचान नहीं थी। स्वप्न में अनिरुद्ध के सौम्य रूप को देखकर इतनी लट्टू हो गई कि सुबह जागते ही अपनी दासी चित्रलेखा से उस सौम्य पुरुष की तलाश करने को बोलती है। जब चित्रलेखा उस सुंदर पुरुष का पता बताने को कहती है तब उषा उत्तर देती है कि उसे उनका पता मालूम नहीं है। वे उषा के लिए संम्पूर्ण अनजान हैं। फिर वह बोलती है कि वह सौम्य पुरुष को वह इतना चाहने लगी है कि यदि वे उसे नहीं मिलेंगे तो उनके विरह से उसका प्राण शरीर से निकल जाने की सम्भावना है:

`रसिका बोइला एमंत होइले
दिशु नाहिं त उपचार
रबिकुमर-पुर जिब जीव निकर
रसिक रतन-विरहे
आउ रहिब कि लब मातर।'[2]

(उषा बोलती है यदि वे नहीं मिलेंगे तो मेरा प्राण उनके विरह से दु:खी होकर यमराज के पुर को चला जायेगा। इसके अलावा कोई दूसरा उपाय मुझे नहीं सूझता है।)
प्रेम की शुरुआत इसी प्रकार `इंदुमती' काव्य में हुई है। राजा अज से नायिका इंदुमती की भेंट होते ही उनके रूप-लावन्य देख कर नयिका विमोहित हो जाती है। लज्जा से अवनत होकर वह चुप्पी साध लेती है। उसके मन की कोमल भावनाएँ झनझना उठती हैं। इनको वह अपनी सहेली से बताना चाहती तो है लेकिन बता नहीं पाती है:

`राजसुता चित्र प्रतिमा पराये
रहिला अजंकु चाहिँ,
लज्जा अनुरोधे मनोगत भाव
प्रकाशि पारिला नाहिं।'[3]

(जिस प्रकार कोई चित्र प्रतिमा स्थिर रहती है, उसी प्रकार नायिका इंदुमती राजा अज को देखती रह गई। फिर शरम के मारे उसका वदन नीचे की तरफ झुक गया। अपने मन में चल रहे भावों को वह

अपनी सहेली से बोलना तो चाहती थी, लेकिन बोल नहीं पाती।)
कवि के `प्रणय-वल्लरी' काव्य में कंण्व मुनी के आश्रम में राजा दुष्मंत को देखते ही शकुंतला के हृदय में प्रेम-प्रसून खिल उठता है:

`शिविरकु गले नृपति, सुंदरी
कुटीरकु हेला नीत,
सुंदरी –हृदये प्रणय-प्रसून
होइगला विकसित।'[4]

(कण्व मुनि के आश्रम में शकुंतला से भेंट होने के बाद राजा दुष्मंत अपने शिविर को चले जाते हैं। शकुंतला अपनी सहेलियों से अपनी कुटिया में लाई जाती है। लेकिन उस पल भर के साक्ष्यात्कार का यह असर हुआ कि शकुंतला के हृदय में प्रेम का प्रसून विकसित होने लगा।)
अत: गँगाधर मेहेर के काव्य में प्रेमियों में प्रेम का उदय हठात होता है। ध्यान देने की बात है कि लगभग हर काव्य में नायिका के हृदय में सबसे पहले प्रेम का संचार हुआ है। बाद में नायक नायिका के प्रति आकर्षित हुए हैं।
प्रेमियों में प्रेम के संचार होने के बाद एक प्रकार की विमुग्ध - स्थिति आ जाती है। उनके मन में प्रिय की भावनाएँ हावी हो जाती है। प्रियपात्र का रूप-लावन्य, चाल-ढाल, बातें, आचार-विचार आदि उनकी सोच के प्रमुख विषय बन जाते हैं। प्रियपात्र की सोच में इस कदर डूब जाते हैं कि लगता नहीं कि दुनिया की किसी दूसरी चीज पर उनका लगाव रहा हो। अनाहूत रूप से हर पल प्रिय की स्मृति आ जाती है और उसी सोच में डूबने से उन्हें आनंद मिलता है। प्रणय-वल्लरी काव्य में शकुंतला के मन में प्रेम का संचार हो चुकने के बाद वही स्थिति आ जाती है। हमेशा दुष्मंत की सोच मन में आती है।
उसी सोच में डूब कर वह आनंद पाती है। उसके हृदय में केवल प्रणय की भावनाएँ राज कर रही हैं। सारी रात बीत जाती है परन्तु उसकी भावनाओं का अंत नहीं होता है:

`विदायकलीन संतुष्ट-दर्शन
नृपतिंकु स्मरि-स्मरि,
प्रणय-प्रमोद-बिमुग्धा सुंदरी
जापन कला शर्वरी।'[5]

(विदाय लेते समय राजा दुष्मंत की जिन-जिन मुद्राओं तथा हाव-भाव से शकुंतला प्रभावित हुई थी , अपनी कुटिया में आने के बाद उन्हीं की सोच में वह डूब गई। अब वह एक मुग्धा नायिका है जिसे केवल प्रणय की सोच से आनंद मिलता है। इस प्रकार शकुन्तला ने सारी रात प्रिय की सोच में बीता दी।)

`रस रत्नाकर' काव्य में नायिका उषा भी नायक अनिरुद्ध के चित्र को देखकर मुग्धा प्रेयसी बन जाती है।अपने प्रिय की तस्वीर को एक-टक देखती रहती है। आखों से प्रेमाश्रु निकलते रहते हैं। शरीर में रोमांच हो रहे हैं। उषा को लगता है कि कंन्दर्प उसको लक्ष्य करके प्रेम – शर छोड रहे हैं और ये सब उसके शरीर में चूभ रहे हैं। अपनी सहेली से `बचाओ – बचाओ' गुहार लगाती है। ध्यान देने की बात यह है कि प्रिय के चित्र को देखकर उषा की यह हालत है तो अपने प्रिय को सशरीर जब देखेगी उसकी हालत क्या होगी ?

`रम्य छबिकि पुन: पुन: अनाइ
नयनुँ बहे प्रेम नीर,
रजनीकर मणि यथा उदय
चाहिँले रजनीपतिर
रन रण जे, बिंधिला तीक्ष्ण मुन शर
`रक्षाकर' बोलि सखींकि कहिला, कम्पिला हेले
कलेवर।'[6]

(प्रिय के सुंदर चित्र को बार-बार देखती है एवं उसकी आँखों से प्रेमाश्रु छलक पडते हैं। जिस प्रकार चाँद को देखते ही रात रूपी नायिका की आखों में ओस रूपी आँसू छलक पडते हैं, उसी प्रकार की कुछ स्थिति उषा की हो रही है। इतने में मदन के तीक्ष्ण प्रेम-शर उसे आ चुभने लगे। शरीर में कँप-कँपी होने लगी और वह अपनी सहेली से `बचाओ-बचाओ' की गुहार करने लगी।)

हृदय में प्रेम के पनपन के बाद प्रियपात्र को पाने की इच्छा बलबत्ती हो जाती है। उसकी सोच अनाहूत आ दिमाग में घूसती है। प्रेमी का मन दुनिया से कटकर प्रियपात्र में केंद्रिभूत होने लगता है। उसका हर पल प्रियपात्र की सोच में गुजरता है। यही है मुग्ध अवस्था जिसे हम गगाँधर के लगभग हर काव्य में प्रेमियों के अंदर, प्रेम के सूत्रपात होने के बाद देखते हैं।

गगाँधर के काव्य में प्रेम का आदर्श रूप हम देखते हैं। कहीं पर भी किसी प्रेमी में चारित्रिक स्खलन देखने को नहीं मिलता है। यहाँ प्रेम शाश्वत है। प्रेम न केवल प्रेमियों के लिए मँगलकारी है, पाठकों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करता है। पद्म का सूर्य के साथ जिस प्रकार का पवित्र-सम्पर्क है, प्रेम में उसी प्रकार की पवित्रता कवि के काव्य में दिखाई देती है। प्रेमियों के मन में एक-दूसरे के लिए किसी प्रकार का न संदेह है. न शिकायत है। एक-दूसरे के हृदय के समर्पण-भाव को वे इस कदर भाँप चुके हैं कि प्रतिकूल परिस्थिति में भी उनका मन अपने प्रियपात्र के लिए स्थिर तथा प्रतिबद्ध बना रहता है। गगाँधर मेहेर के `तपस्विनी' काव्य को देखा जाए। प्रजानुरंजन के लिए रामजी सीता जी का त्याग कर देते हैं। लक्ष्मण जी जँगल में सीता जी को छोडकर वापस आते समय सारी बातों का खुलासा करते हैं और उनसे माफी माँगकर वापस आते हैं। प्रिय से विछुड जाने का दु:ख सीताजी को तो है लेकिन उनके खिलाफ किसी प्रकार की शिकायत नहीं है। वे जानती हैं कि उनके प्रिय को मजबूरन यह कदम उठाना पडा है। इसमें उनके प्रिय का कोई कसूर नहीं है। सीता जी की भावमुद्राओं से इन सारी बातों का खुलासा हो जाता है। वे पूर्व दिशा की तरफ देखती रहती हैं तथा आँखों से लगातर आँसू की धारा बह निकलती है। मुँह से न राम जी के खिलाफ कुछ शब्द निकलते थे, न लक्ष्मण जी के खिलाफ। पूर्व दिशा की तरफ ताकने के दो प्रकार के अभिप्राय हो सकते हैं। पहला है पूर्व दिशा में अयोध्या नगरी है जहाँ उनका प्रिय रामजी रह रहे हैं। अयोध्या के प्रति उनका मोह को सीता जी छोड नहीं पा रही है। दूसरा उद्देश्य पुर्व दिशा में धर्म के देवता सुर्य भगवान उगे हुए हैं। सीताजी उनसे शायद जानना चाहती हैं कि उनके होते हुए ऐसा क्यों हो रहा है ? क्या अपने भाग्य के खोट को वह भुगत रही है ? उसे किस कसूर की सजा मिल रही है ?

`सेहि कूले बइदेही गाढ मनोदु:खे
उभा होइ चाहुँथिले पूर्व अभिमुखे।
अविरत बहि तांक नेत्र- नीर –झर
अबिरत पडुथिला बक्षर उपर।'[7]

(उसके किनारे खडे होकर सीताजी अत्यंत दु:खी बन पूर्व दिशा की तरफ निरखती थीं। उनकी आखों से आँसू लगातार गिरते हुए उनके वक्ष स्थल पर चुक रहे थे।)

प्रिय से विछुडने के बाद सीता जी की जो हालत होती है, अपनी जान से प्यारी सीता जी को जँगल में भेजने के बाद रामजी की वही हालत होती है। राम जी की आँखों से लगातार आँसू निकल रहे थे। उन आँसुओं को निकल न जाने के लिए वे अनुरोध करते हैं। क्योंकि उनके हृदय रूपी तडाग में सीताजी रूपी कमल खिला हुआ हैं। आँसू रूपी जल निकल जाने से हृदय रूपी तडाग सूख जायेगा और उसमें सीताजी रूपी कमल जो खिला हुआ है वह मुरझा जायेगा। आहिस्ते-आहिस्ते उसके अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लग जायेगा। राम जी इसे

बरदास्त कैसे कर पायेंगे ? फिर रामजी के हृदय में सीताजी रूपी कमल रहने के कारण किसी प्रकार उनके मन रूपी भौरे को दर्शन का सुख मिल जाता है तथा सीताजी के अवर्त्तमान का दुख लाघव हो जाता है। उनके दिन किसी प्रकार गुजर जाते हैं। हृदय में वह कमल न होने से राम जी का जीवन दुभर होना अवसम्भाविक है:

`नाहिं सिना घरे हृद प्रेम-सरे
मो प्रिया-कमल- कलि
पडिअछि फुटि मकरंद लुटि
करुअछि मन-अलि।
नयन-युगल काहिंकि बिकल
होइ छाडु अछ जल,
सूखि गले सर कमलिनी मोर
होइजिब टलमल।'[8]

(घर में मेरी प्रिया नहीं है किंतु मेरे हृदय में प्रिया रूपी कमल की कली खिली हुई है जिसकी खुशबू को मेरे मन रूपी भौरा लूट रहा है। री आँखें ! उसके विरह से कातर होकर क्यों इतना आँसू छोड रही हों ? हृदय रूपी तालाब में जल है, इसलिए तो मेरी कमलिनी का अस्तित्व बना हुआ है। जिस प्रकार उस तालाब के जल को तू निकाल रही है, वह तालाब सूख जायेगा और कमलिनी भी नहीं रहेगी। तब मेरे मन रूपी भौरे के लिए मकरंद कहाँ से मिलेगा ?)
गँगाधर मेहेर के काव्य में प्रेम की विमल - धारा प्रवाहित होती है। यह प्रेम सारे पाठकों के लिए आदर्श है और समाज को भी इस प्रकार का प्रेम अपेक्षित है।
वियोग का अत्यंत हृदयविदारक वर्णन गँगाधर मेहेर के काव्य में दिये गये हैं। चूँकि प्रेमियों के प्रेम निश्चल,सरल तथा आत्मसमर्पण की भावना से युक्त हैं, एक की जुदाई दूसरे के लिए असहनीय प्रतीत होती है। ऐसी स्थिति में उन्हें लगता है कि जैसे उनके शरीर से आत्मा निकल जा रही है। आत्मा के न रहने से शरीर का क्या मोल रह जाता है ? मन की सरसता गायब हो जाती है। निराशा छा जाने लगती है। पूरी दुनियाँ से कटे हुए खोया-खोया सा रहने लगता है। दिन में प्रियपात्र की स्मृतियाँ मन के अंदर बार-बार आती हैं एवं हृदय को तहस-नहस करके चली जाती हैं। रात में प्रियपात्र के स्वप्न आ जाते हैं और प्रेमी की नींद चौपट हो जाती है। उसे न दिन में चैन मिलता है न रात में। दुनियाँ के सारे आकर्षण एवं सुख उसके लिये फीके लगते हैं। `इंदुमती ' काव्य में अज की विरह वेदना सारी हदें पार कर जाती है। दिन का उजाला भी अज को अँधकार जैसा लगता है। वे महसुस करते हैं कि कुसमय रूपी बादलों से घिर कर सारी धरती प्रभाहीन हो गयी है:

`बांधवी ! तो बिना गाढतमोमय
दृश्य हेउछि धरणी,
विद्युतप्रभाहीन घन घनांचल
जेमंत दिशे रजनी।'[9]

(अज विलाप करते हुए बोलते हैं – री बांधवी ! तेरे बिना मुझे धरती में केवल अँधकार ही अँधकार दिखाई देता है। जैसे बादलों के घिरने से रात प्रभाहीन बन जाती है उसी प्रकार मेरी आँखों की रोशनी कहीं चली गई है।)
`प्रणय वल्लरी' काव्य में प्रेमिक दुष्मंत की वियोग -दशा अनोखी लगती है। मिलन के समय जो-जो चीजें आनंददायक होती थीं वे सब विरह में दु:खदायी बनने लगीं। कोयल और तोते के स्वर तब मधुर लगते थे अब कर्कश लगने लगे हैं। मिलन के समय जिन फूलों की खुशबू से वे विमोहित होते थे, वियोग में स्थिति में वे सब बदबूदार प्रतीत होने लगी हैं:

`स्वभावत: सुक पीक शारी स्वन
श्रवण – तोषण पटु,
किंतु प्रिया बिना सेहि स्वर एबे
हेउअछि कर्ण-कटु।
प्रिया करे थाइ जेउँ फुल मोते
देउथिला मधु-गंध,
ताहा बास एबे नासारंध्रे पशि
मने लगाउछि द्वंद्व ।'[10]

(स्वभावत: तोता, कोयल, शारी आदि के स्वरों से राजा दुष्मंत को बडा लगाव था। लेकिन आज अपनी प्रिया के बिना उन सबके स्वर कर्ण-कटु लग रहे हैं। प्रिया के हाथ में रहते हुए जो फूल खुशबूदार प्रतीत होते थे वे सब अब (विरह में) नासारंध्र में प्रवेश कर बदबूदार लगने लगे हैं जिसको ले कर मन में द्वंद्व पनपते हैं कि ये सब क्या हो रहे हैं ?) `तपस्विनी काव्य में पति से बहुत दुर जँगल में वनवास का दु:ख झेलती हुई सीता जी अपने प्रिय के विरह से करुण विलाप कर रही है। उनका क्रंदन इतना मर्मभेदी था कि प्रकृति के हर उपादान में उसका प्रभाव दिखने लगा । हवा की गति धीमी पड गयी। सीता जी के दु:ख से धरती माँ भी समवेदना दिखाती हुई रोने लग गई। गँगा जी के प्रवाह में प्रखरता नहीं रही तथा उनकी तरंगे शांत हो गयीं। जँगल की पशुएँ तथा पक्षियाँ सीता जी की रुलाई से म्रियमाण हो गयीं और उनका कलरव बंद हो गया:

`सतींक रोदने गति स्तम्बिला बातर
जल स्थल घेनि हेला निसर्ग कातर।
स्तम्बिगला जाह्नबीर तरंग-आबली,
बंद होइगला बने विहंग काकलि।[11]

(सीता जी के क्रंदन से हवा की गति रुक गई। जल से लेकर स्थल तक सब दु:खी बनने लगे। गँगा नदी की तरंगों की गति भी मंद पड गई। जँगल के पक्षियों का कलरव रुक गया। इस प्रकार सीता जी के दु:खों से सब हमदर्द बनने लगे।)

गँगाधर मेहेर के काव्य में प्रणय चेतना का वियोग पक्ष इतना सशक्त है कि कोई भी सहृदय इसे पढने के बाद विगलित हो जाना स्वभाविक है। उनके किसी भी काव्य में देखें, वियोग की स्थिति में केवल स्वच्छ,पवित्र,प्रेम की मंदाकिनी बहती हुई नजर आयेगी। वियोग से प्रपीडित प्रेमी में कहीं पर भी वियोगजन्य हताशा नहीं मिलेगी। अपितु लगेगा कि जैसे उनका प्रेम अधिक से अधिम प्रगाढ बनता जा रहा है। वियोग में प्रियतम के प्रति किसी प्रकार की शिकायत नहीं है। क्योंकि प्रेमी भलीभाँति जानता है कि उसके प्रियतम के प्यार में किसी प्रकार के खोट अथवा छल-कपट नहीं है।

गँगाधर मेहेर के काव्य में प्रेमी कभी भी अपने प्रियपात्र पर किसी भी हालत में शक नहीं करते हैं। प्रियपात्र के प्रति पूर्ण-समर्पण की भावना कवि की प्रणय चेतना की प्रमुख विशेषता है। एक बार प्रेमी किसी को अपना मन दे देता है तो किसी भी परस्थिति से उससे मुकर जाना वह पसंद नहीं करता है। `तपस्विनी' काव्य में सीताजी को देखिए। पति से निर्वासन का दण्ड मिल चुकने के बाद भी पति के प्रेम पर वह किसी प्रकार का शक नहीं करती है। सीता जी का हृदय मानता है कि उसके पति को ऐसी निष्पति मजबूरन लेनी पडी होगी। निर्वासन में भी सीता जी के मन में अपने पति के प्रति पूर्ववत प्रेम की भावना कायम है। हर पल वह अपने पति को याद करती है।

उजागर रहते समय पति का स्मरण आना स्वभाविक है। सोते समय भी राम जी सपनों में आते हैं। फिर जब सीता जी जागती हैं तब अपने शोक जर्जरित मन रूपी दर्पण में राम जी के प्रतिबिम्ब को प्रतिफलित करके शय्या त्याग करती हैं। राम जी का दर्शन कर लेने पर हृदय रूपी कमल खिल उठता है। निश्चल प्रेम का उदाहरण इससे और अधिक क्या है कि जिनसे वनवास का दु:ख तथा विरह मिला, उनको अपने आराध्य की भाँति सोते-जागते सीता जी स्मरण कर रही हैं:

`पद्मिनी-हृद –शिशिर- बिंदुरे खर रश्मिर
प्रतिबिम्ब परि, बीर राम-मूरती
शोक जर्जरित चित्त- फलके करि चित्रित
हेले आसनुँ उत्थित जानकी – सती
नमि अनुकम्पा पयरे
बंदिले उषार पद सविनयरे ।[12]

(जिस प्रकार कमल के पत्तों में ओस की बुँद गिरने से सूर्य उन बूदों में प्रतिफलित होते हैं, उसी प्रकार नींद से जागते समय सीता जी अपने शोक से जर्जरित हृदय रूपी दर्पण में राम जी की छवि को प्रतिविम्बित करके शय्या त्याग करती हैं। पहले अनुकम्पा (आश्रम की एक बुजूर्ग सेविका) को नमस्कार करके फिर उषा की पद-वंदना करती हैं।)

केवल इतना नहीं, सीता जी को लगता है कि राम जी उनको वनबास का दण्ड देकर दु:खी बन रो रहे हैं जो विलकुल यथार्थ था तथा इसका उल्लेख पहले हो चुका है। प्रेमी एवं प्रियपात्र की भावनाएं एक जैसी हैं। बहुत दुर में रहने के बावजूद भी जैसे एक-दुसरे की अंतरात्मा की आवाज को भाँप जाते हैं। जँगल में रह रही सीता जी अयोध्या में रह रहे राम जी को समझाती हैं कि `आप मेरी चिंता मत कीजिये। मैं विलकुल सकुशल हूँ।' लगता है जैसे दोनों प्रेमी आमने-समने बैठकर बातें कर रहे हैं। प्रणय में वैसी आत्मसमर्पण की भावना अनन्य है और इसकी जितनी प्रशंसा की जाय, वह कम है।

प्रणय चेतना के चाहे संयोग पक्ष हो या वियोग पक्ष इनकी परिपक्वता के साथ-साथ प्रेमी का मन आहिस्ते-आहिस्ते उदार बनता जाता है। ऐसी स्थिति में वह अपनी चिंता से दुसरों की चिंता को ज्यादा महत्व देता है।

वह ऐसा काम करना चाहता है जिससे उसकी आत्मा को शांति मिले तथा दूसरों को भी सुकून मिले । ऐसी स्थिति में प्रेमी को अपनी चिंता से अधिक अपने प्रियपात्र तथा समाज की चिंता सताती है। इनको खुशी एवं आनंद देकर वह आत्मिक शांति पाना चाहता है। `तपस्विनी' काव्य में वनवास में रही सीताजी की सोच की आलोचना करने से इसका पता लग जाता है। सीता जी चाहती है कि उनके पति के ऊपर जो राजधर्म का कलंक (राजधर्म काअच्छी तरह से न निभा पाने का कलंक) लग रहा है, वह दूर हो जाए एवं जन-साधारण के मन में शंका न रहे। वे रीति,नीति तथा धार्मिक मार्ग से दुर न हटे। प्रजाओं का विश्वास एवं उसके पति का सम्मान उसके लिए सर्वोपरि है। जिस प्रेम में त्याग की भावना नहीं है वह कैसा प्रेम है ? सीता जी वनबास को स्वीकार कर लेती है। सीता जी नहीं चाहती हैं कि उनकी स्मृतियाँ राम जी को सतायें और यह राजधर्म के पालन में वाधक बनें। इसलिये राम जी से अनुरोध करती हैं कि वे सीताजी की स्मृतियों को मन से हटा दें:

`मो स्मृति मेण्टाइदेब हृदय – फलके
ता न कले दु:ख हेब पलके पलके।
मुँ कि छार हेउ तुम्भ प्रकृति – रंजन
मुँ मरे, तुम्भर हेउ कलंक – भंजन।'[13]

(आपके हृदय रूपी दर्पण से मेरी स्मृति को मिटा दीजिए। ऐसा नहीं करेंगे तो हर पल आपको दु:ख मिलेगा तथा अपना कर्तव्य आप निभा नहीं पायेंगे। मैं नगन्य हूँ। मैं चाहती हूँ कि राज-धर्म जैसा सुंदर कर्तव्य को आप भलीभाँति सम्पन्न कर सके एवं प्रजाओं को सुखी बना सके। फिर मेरे कारण आपके निर्मल चरित्र में कलंक लगे, यह मैं नहीं चाहती हूँ ।)

यहाँ सीता जी अपने पति तथा प्रजाओं को सुखी देखना चाहती हैं। उन्हें वनवास का दण्ड कबूल है किंतु अपने पति एवं प्रजाओं को दु:खी देखना कबूल नहीं है। उनके पति अपने हृदय में उनकी सोच रखेंगे तो राजधर्म का समुचित पालन नहीं कर पायेंगे । दूसरों के श्रेय में सीता जी अपने प्रेय (आत्मिक शांति) की तलाश कर रही हैं जिसकी रचनात्मक दिशा सबको मान्य तथा अपेक्षित भी है और इस भावना के मूल में त्याग ही झलकता है।

लम्बे विरह के बाद जब प्रेमी आपस से मिलते हैं तब दोनों में आनंद का चरम- परिप्रकाश होता है। आँखों में प्रेमाश्रु छलक पडते हैं। मन की खुशियाँ इतनी बढ जाती हैं कि उसका प्रतिफलन आँखों में दिखाई देने लगता है। शरीर रोमांचित हो उठता है। हृदय की निराशा दूर भाग जाती है उसके स्थान पर प्रेमांकुर पैदा होने लगता है। हृदय के पुलक एवं सन्तोष की झलक होंठों तथा आँखों में होकर बाहर को दिखाई देती है। `प्रणय- वल्लरी' काव्य में शकुंतला को जब दुष्मंत के आने का समाचार मिलता है तब आनंदातिरेक से शकुंतला की आँखों से प्रेमाश्रु छलक पडते हैं:

`कुमर–बचने शकुंतला प्राण
होइगला सुधास्नात
कांत- दरशने पुलक छलरे
प्रेमांकुर हेला जात।
हास ता' अधरे न फुटि बदने
नेत्रे हेला सन्चारित
नबीन मृदघट- जल बाहारकु
हुए जथा संक्षरित।'[14]

(बेटे की बातों को सुनने से इतनी खुशियाँ आयीं जैसे शकुंतला का प्राण अमृत से स्नान कर रहा हो। उसी समय अपने पति को देखने से शरीर पुलकित होने लगा तथा हृदय में प्रेमांकुर फूटने लगा। आनंदातिरेक की वजह से हास्य उसके अधर में सीमित होकर नहीं रहा, अपितु नेत्र को संचरित होने लगा जैसे कटोरे में अधिक जल हो जाए तो वह बाहर को निकल जाता है।)

प्रेमियों के लिए मिलन का मुहूर्त महार्घ होता है क्योंकि लम्बी प्रतीक्षाओं एवं निरशाओं के बाद यह हासिल होता है। इससे पहले तो मिलन की कभी आशा जगती थी तो कभी इंतजार करते-करते मन में निराशाएँ छा जाती थी। आशा पर निराशा हमेशा भारी पड्ती रहती थी। लेकिन जब वह बहुप्रतीक्षित मुहूर्त आता है तब मन की खुशियाँ सीमा-सरहद नहीं मानती है। `इंदुमती' काव्य में इसका नजारा देखने को मिलता है। स्वयम्बर में आये हुए राजाओं के साथ प्रेमिक `अज' युद्ध् कर रहे हैं। अज के गले में बरणमाला देने के बाद प्रेमिका `इंदुमती' उनका इंतजार कर रही है। मन में संघर्ष चल रहा था कि क्या पता इतने सारे राजाओं को पराजित कर पायेंगे या नहीं ? लम्बे इंतजार के बाद जब अज युद्ध जीत कर वापस आते हैं तो इंदुमती का आनंद देखने लायक है:

`समर बिजयी पतिंकि अनाइ
लभिले अमूल्य सुख,
पद्मिनी सुंदरी दर्शन कला कि
मेघमुक्त रबि-मुख्।'[15]

(जैसे बादल से मुक्त आकाश में सूर्य का दर्शन करके कमल खिल उठता है उसी प्रकार युद्ध में विजयी बने अपने पति को देख कर इंदुमती अमूल्य सुख पाने लगी।) मिलन हमेशा सुखदायी होता है। गगाँधर मेहेर के लगभग सारे काव्य सुखात्मक हैं। पाठक को भी ऐसा मिलन चाहिए ताकि समग्र काव्य पढने के बाद उनके मन को भाराक्रांत होना न पडे। मिलन के लिए तडप रहे नायक –नायिका को सम्मिलित होते देख पाठक आनंद से झूम उठता है और उनकी आँखें भी आनंद के मारे सजल हो जाती हैं। ध्यान देने की बात यह है कि गँगाधर मेहेर नीतिनिष्ठ थे। प्रणय में भी उन्होंने नीतिहीनता को कभी भी प्रश्रय नहीं दिया है। जहाँ कहीँ इस प्रकार नीतिहीनता दिखाई देती है वहाँ किसी न किसी रूप से प्रेमियों को सचेत करा देते हैं। जैसे `प्रणय वल्लरी' में प्राक-वैवाहिक प्रेम है जहाँ प्रौढ दुष्मंत को तरुणी शकुंतला चाहती है जिसको तत्कालिन समाज कभी भी अच्छी दृष्टि से नहीं देखेगा। इस भूल के लिये उन्हें दुर्वाशा ऋषि का अभिशाप को झेलना पडा। अथक साधना और संघर्ष के बाद उनका मिलन होता है। डॉ० हेमंत कुमार दास ने उचित ही लिखा है:

`गँगाधरंक प्रेम हेउच्छि परिशीलित, त्याग निर्जित, पूत एवं शुचिबंत। तेणु गँगाधरंकु आमे `क्लासिक प्रेमर सफल रूपकार' बोलि स्म्बोधन करि पारुँ।'[16]

(गँगाधर जी का प्रेम शालीन,त्याग निर्जित, पूत एवं शुचिवंत है। इसलिए गंगाधर जी को हम `क्लासिक प्रेम का सफल रूपकार' के रूप में सम्बोधन कर सकते हैं।)

`रस रत्नाकर' में उषा- अनिरुद्ध के प्रेम को युवायों का बोध-बुद्धिहीन प्रेम माना जा सकता है। उषा सपने में एक तरुण (अनिरुद्ध) को देख लेती है ,और उसे अपना मन , प्राण समर्पण कर बैठती है। उस समय वह विचार करना उचित नहीं समझती है कि अनिरुद्ध में सदगुण है या अवगुण है ?, वह किस बिरादरी का है ?, उसके साथ उसकी शादी हो सकेगी या नहीं ?, अनिरुद्ध उसे पसंद करेंगे या नहीं?, आदि। केवल सुंदर रूप को देख करकेअपना पति मानने लगी। इस परिप्रेक्ष में आलोचक T. Gonde का कथन सार्थक प्रतिपादित होता हुआ दिखता है:

> `Lovers have always had a prediction for metaphors and similes in describing the excellences of their sweet hearts.'[17]

(प्रेमी हमेशा अपने प्रियपात्र के सदगुणों को बढा-चढा करके वर्णन करते हैं और मान लेते हैं कि केवल वे ही उनके लायक हैं।)

बिना सोचे- समझे जो प्रेम किया जाता है उसकी कुपरिणति को `रस-रत्नाकर' काव्य में दिखाया गया है।है। उषा को अपने प्रेम साकार करने के लिए भारी मोल चुकाना पडा। उसके पिता जी को जीवन देना पडा और उनका विशाल साम्राज्य तहस-नहस हो गया। अत: प्रणय में उद्धामता तथा उत्सृंखलता गँगाधर जी को मंजुर नहीं है। उनका प्रेम आदर्श प्रेम है जो कभी भी समाज तथा परम्परा के खिलाफ नहीं जाता है। डॉ० अशोक कुमार महापात्र ने उचित ही कहा है:

> `गँगाधरंक रोमंटिक काव्यानुभव प्रकृति भितरे मानबतार आरोप, आदर्श प्रेम ओ प्रणयर परिवेषण, लौकिकता, वास्तवता ओ सामाजिकता तथा परम्परा प्रति आनुगत्यशीलता भितरेहिं प्रकाशित होइछि।'[18]

(गँगाधर जी के काव्यानुभव प्रकृति का मानवीकरण, आदर्श प्रेम तथा प्रणय, लौकिकता, वास्तवता, सामाजिकता तथा परम्परा के लिए आनुगत्यशीलता पर टिका हुआ है।)

निष्कर्ष

1. प्रेमियों के हृदय में प्रेम का उदय अकस्मात होता है।
2. प्रेम की शुरुआत के बाद प्रेमी मुग्धावथा में आ जाते हैं।
3. गँगाधर मेहेर के काव्य में प्रेम के आदर्श रूप का अविरल प्रवाह है।
4. प्रेम में पूर्ण-आत्मसमर्पण की भावना झलकती है।
5. वियोग के हृदयविदारक रूप का वर्णन किसी भी सहृदय को स्तब्ध बना देता है।
6. प्रेम की परिपक्व - अवस्था में श्रेय-मयी प्रेय रचनात्मक ज्ञान-धारा का उन्मेष होता है जो समाज को अपेक्षित है।
7. मिलन के मनमोहक रूप से पाठक की आँखें नम हो जाती है।

प्रेम तथा प्रणय शालिन, संयत, आदर्शपूर्ण हो, यह गँगाधर की प्रणय चेतना का मुख्य संदेश है। इसमें छल तथा कपटाचार का स्थान नहीं है। आदर्श प्रेम के लिए अपने प्रियपात्र पर पूर्ण-समर्पण की भावना को कायम रखना अपेक्षित है। प्रतिकूल स्थिति में भी जैसे यह भावना न डगमगाये। आदर्श प्रेम को समाज सराहता है और प्रतिकुल स्थिति आने पर हमदर्दी तथा मदद का हाथ बढाता है। गँगाधर के काव्य में प्रेमी अपने प्यार के साथ-साथ श्रेय-मयी प्रेय रचनात्मक ज्ञान-धारा को भी महत्व देते हैं जो समाज के लिए अपेक्षित है। प्रेमियों के मन में प्रेम का अकस्मात आविर्भाव होना,और उन्हें मुग्धावस्था तक ले जाना आदि युवाओं के मन पर प्रेम का जबरदस्त प्रभाव को दर्शाता है। प्रेमियों को चाहिये कि इससे बह न जाये और प्रेम की उद्धामता तथा उत्सृंखलता से बचे। इसमें उनका तथा समाज का मंगल निहित है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. ओडिया साहित्य र इतिहास – डॅ० मायाधर मानसिंह, ग्रंन्थ मंदिर, बिनोद बिहारी, कटक, 1967, पृ०- 247
2. रस-रत्नाकर - गँगाधर मेहेर- गँगाधर ग्रंथावली, ग्रंथ मंदिर , कटक, 2015,पृ०- 4
3. इंदुमती- गँगाधर मेहेर- गँगाधर ग्रंथावली, ग्रंथ मंदिर , कटक, 2015,पृ०- 18
4. प्रणय-वल्लरी – गँगाधर मेहेर- गँगाधर ग्रंथावली, ग्रंथ मंदिर , कटक, 2015,पृ०- 160
5. प्रणय-वल्लरी - गँगाधर मेहेर- गँगाधर ग्रंथावली, ग्रंथ मंदिर , कटक, 2015,पृ०- 160
6. रस –रत्नाकर - गँगाधर मेहेर- गँगाधर ग्रंथावली, ग्रंथ मंदिर , कटक, 2015,पृ०-4

7. तपस्विनी-- गँगाधर मेहेर- गँगाधर ग्रंथावली, ग्रंथ मंदिर , कटक, 2015,पृ०-94
8. तपस्विनी-- गँगाधर मेहेर- गँगाधर ग्रंथावली, ग्रंथ मंदिर , कटक, 2015,पृ०- 102
9. इंदुमती- गँगाधर मेहेर- गँगाधर ग्रंथावली, ग्रंथ मंदिर , कटक, 2015,पृ०-28
10. प्रणय-वल्लरी - गँगाधर मेहेर- गँगाधर ग्रंथावली, ग्रंथ मंदिर , कटक, 2015,पृ०-184
11. तपस्विनी-- गँगाधर मेहेर- गँगाधर ग्रंथावली, ग्रंथ मंदिर , कटक, 2015,पृ०-97
12. तपस्विनी-- गँगाधर मेहेर- गँगाधर ग्रंथावली, ग्रंथ मंदिर , कटक, 2015,पृ०-105
13. तपस्विनी- गँगाधर मेहेर- गँगाधर ग्रंथावली, ग्रंथ मंदिर , कटक, 2015,पृ०-96
14. प्रणय-वल्लरी - गँगाधर मेहेर- गँगाधर ग्रंथावली, ग्रंथ मंदिर , कटक, 2015,पृ०-194-195
15. इंदुमती- गँगाधर मेहेर- गँगाधर ग्रंथावली, ग्रंथ मंदिर , कटक, 2015,पृ०-23
16. यात्रार प्रथम पाद `रस – रत्नाकर' – डॉ० हेमंत कुमार दास – गँगाधर काव्य-मानस – संपादना- सारला साहित्य संसद – ओडिशा बुक स्टोर, 1994, पृ०- 36
17. Gonda.T – `Remarks on smiles in Sanskrit literature.'
18. रोमांटिक काव्यानुभव ओ कवि विनोद नायक-डॉ० अशोक कुमार महापात्र – प्रतीची प्रकाशन , ब्रह्मपुर, 2000, पृ०- 88.